बिलट महथा आदर्श महाविद्यालय, बहेड़ी

दिनांक : 04.07.2020

हिन्दी प्रतिष्ठा
स्नातक प्रथम खण्ड

व्याख्यान का संक्षिप्त अंश
— उमेश कुमार

रीतिकालीन रीतिबद्ध एवं रीतिमुक्त कवियों का सामान्य परिचय

हिन्दी साहित्य के अन्तर्गत सं. 1700 से 1900 तक का काल रीतिकाल के नाम से जाना जाता है। रीति-ग्रंथों की बहुलता को देखकर ही आचार्य शुक्ल ने इस काल का नाम रीतिकाल रखा था। कुछ इतिहासकारों ने प्रवृति के आधार पर इसे श्रृंगार काल भी कहा है। इस काल में श्रृंगार का वर्णन अधिक मात्रा में हुआ है। लेकिन इस काल के कुछ कवियों ने संस्कृत ~~साहित्य~~ काव्य शास्त्र के आलोक में रीति मुक्त रचनाएँ की है, तो कुछ कवियों ने रीति-धर्म से हटकर रचनाएँ की है। अतः रीति काल में दो प्रकार के रचनाधर्मी हुए। रीति से युक्त रचना करनेवाले कवियों के समूह को 'रीतिबद्ध' तथा रीति से हटकर रचना करने वाले कवियों को 'रीतिमुक्त' समूह में रखा गया।

आ॰ शुक्ल ने रीति की बँधी-बँधाई शास्त्रीय परम्परा का अनुगमन करने वाले 57 कवियों का जिक्र किया है। इन कवियों ने लक्षण-ग्रंथों की रचना की थी। स्वतंत्र रूप से काव्य रचना करने वाले 46 कवियों का जिक्र उन्होंने किया है जिसे हम 'रीति मुक्त' काव्य-श्रेणी में रखते हैं। इन कवियों ने न तो लक्षण ग्रंथों का निर्माण किया न ही काव्यशास्त्रीय ~~रीति~~ पहलुओं को अध्ययन का विषय बनाया। परन्तु दोनों प्रकार के कवियों में श्रृंगारिक भावनाएँ देखी जा सकती है।

रीतिमुक्त : इस काल के कवियों ने श्रृंगार एवं प्रेम विषय काव्य रचना की है। इसके अलावे भक्ति, नीति, संगीत, वीरता, कामशास्त्र, ज्योतिष, राजनीति आदि विषयों पर आधारित अनेक ग्रंथों की रचना की है। आचार्य शुक्ल ने इन्हें सात वर्गों में बाँटा है —

(i) रीतिमुक्त प्रेम काव्य : इसके अन्तर्गत रसखान, घनानन्द, आलम, बोधा, ठाकुर आदि प्रमुख कवि आते हैं।

(ii) कथा काव्य : — इस कोटि में आनेवाले कवियों ने कथा-प्रबन्ध की रचना की है। इसके अन्तर्गत लालकवि (छत्रप्रकाश), सूदन (सुजान-चरित), जोधराज (हम्मीर रासो), सबलराम (जैमिनी पुराण), गोकुलनाथ (महाभारत), सबलसिंह (महाभारत), गुरु गोविन्द सिंह (चण्डी चरित) आते हैं।

(iii) खण्डकाव्य : — इस ~~कोटि~~ के कवियों ने प्रबन्ध-काव्य के अन्तर्गत आने वाले विभिन्न प्रसंगों पर आधारित रचनाएँ की है जिसमें दान लीला, मानलीला, जल विहार, झूला, जन्मोत्सव, मंगल वर्णन, होली आदि ~~के प्रसंगों~~ प्रमुख है।

(iv) नीति के पद : — इस काल के अन्तर्गत कवि वृन्द, गिरिधर कविराय, घाघ आदि ने नीति के पदों की रचना की है।

(v) उपदेशात्मक पद : — कुछ कवियों ने उपदेशात्मक पदों की रचना की है।

(vi) भक्ति एवं विनय के पद : — इसके अन्तर्गत सगुण भक्ति और निर्गुण भक्ति के उपासक कवियों ने भक्ति और विनय के पद रचे हैं। निर्गुण सम्प्रदाय के प्रचारक कवियों में दरिया साहब, यारी साहब, पलटू आदि प्रमुख थे। प्रेम मार्गी कवियों में नूर मुहम्मद, निसार, ख्वाजा आदि प्रमुख कवि आते हैं।

(VII) वीरता के पद :- इस काल में वीर रस के भी कवि हुए। यथा — भूषण, लाल, सूदन, पद्माकर इत्यादि।

रीतिबद्ध ! रीतिबद्ध कवि भी शृंगार और प्रेम के कवि रहे हैं। इसके अन्तर्गत दो प्रकार के कवि हुए। एक ऐसे कवि जिन्होंने साहित्य शास्त्र की बँधी-बँधाई परम्परा का अनुसरण कर रस, रीति, अलंकार, छन्द, शब्दशक्ति आदि सम्बंधी लक्षण ग्रंथों की रचना की। दूसरे वर्ग के ऐसे भी कवि हुए जिन्होंने लक्षण ग्रंथों की रचना तो नहीं की परन्तु उनकी रचनाओं में शृंगार और प्रेम के वर्णन में साहित्य शास्त्र के उदाहरण खोजे जा सकते हैं। प्रमुख कवि :- देव, बिहारी, मतिराम, पद्माकर, कुलपति, भिखारीदास, सुखदेव, चिन्तामणि, कालिदास, सूरति मिश्र, श्रीपति, सोमदेव ~~बेनी~~ बेनी प्रवीन आदि। बिहारीलाल के दोहों में लक्षण के अनेक उदाहरण मिलते हैं जिसके कारण उन्हें रीतिबद्ध कवि के अन्तर्गत रखा गया है। उन्होंने अलग से कोई लक्षण ग्रंथ नहीं लिखा। ~~देव~~ बिहारी की तरह रसलीन, रसनिधि आदि ऐसे ही लक्षण ग्रन्थ मुक्त कवि थे। ऐसे कवि को स्वच्छंद कवि भी कहा गया है। अधिकतर कवियों मुक्तक की रचना की है।

रचना शैली की दृष्टि से रीतिमुक्त और रीतिबद्ध कवियों में प्रायः अंतर तो नहीं है परन्तु लक्षण ग्रंथों को लेकर अन्तर दिखलाया जाता है। दोनों वर्ग के कवियों में शृंगारिक भावना देखी जा सकती है। रीतिबद्ध रचनाकार को अलंकार या नायिका-भेद को उदाहृत करने के लिए पद्य लिखना पड़ता था अर्थात उसके लक्षण को स्पष्ट करना पड़ता था। रीतिमुक्त रचना कार इन सब झमेले से मुक्त था। वे उन्मुक्त भाव से रचना करते थे।

बिहारीलाल की 'सतसई' लक्षण ग्रन्थ नहीं बल्कि लक्ष्य-ग्रंथ है। इसलिए बिहारीलाल को रीतिबद्ध कवि के रूप में जाना जाता है।

रीतिमुक्त कवियों की मौलिकता ; भावना की प्रधानता, रीति के बंधन से मुक्त, तन्मयता, स्वच्छन्दतावादी दृष्टिकोण, रोमान्टिसिज्म, प्रेम की लौकिक भावना, संयोग-वियोग, प्रकृति-वर्णन आदि पहलुओं पर आधारित है।

4.7.2020

डॉ. उमेश कुमार
हिन्दी विभागाध्यक्ष
बि.म. आदर्श महाविद्यालय, बहेड़ी